topic 26

ॠदन्त एवं उदन्त धातु

ह्वृ कौटिल्ये। ह्वरति।

ऋतश्च संयोगादेर्गुणः।

ऋदन्तस्य संयोगादेरङ्गस्य गुणो लिटि।
उपधाया वृद्धिः। जह्वार। जह्वरतुः।
जह्वरुः। जह्वर्थ। जह्वरथुः। जह्वर।
जह्वार, जह्वर। जह्वरिव। जह्वरिम।
ह्वर्ता

ऋद्धनोः स्ये।

ऋतो हन्तेश्च स्यस्य इट्। ह्वरिष्यति।
ह्वरतु। अह्वरत्। ह्वरेत्।

गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः।

अर्तेः संयोगादेर्ऋदन्तस्य च गुणः स्याद् यकि आर्धधातुके लिङि च। ह्वर्यात्। अह्वार्षीत्। अह्वरिष्यत्। श्रु श्रवणे।

यक और सार्वधातुक (~~लिङ् का निषेध करता है। इस प्रकार~~) से भिन्न यकारादि लिङ् प्रत्यय परे होने पर ऋ और संयोगादि ऋकारान्त अङ्ग के स्थान में गुण होता है। अलोऽन्त्यस्य परिभाषा से यह गुणादेश अन्त्य वर्ण ऋकार के ही स्थान पर होगा। उदाहरण के लिए आशीर्लिङ् आर्धधातुक लिङ् है, क्योंकि उसके स्थान पर हुए तिङ् आदेशों को 'लिङाशिषि' से आर्धधातुक

संज्ञा है। आदेश के द्वारा लिङ् भी आर्धधातुक होजाता है। इसलिए आशीर्लिङ् के प्रथमपुरुष एकवचन में 'ह्वृ' का 'ह्वर्यात्' रूप बनने पर 'यकारादि' 'यात्' अङ्ग 'ह्वृ' के ऋकार के प्रत्यय परे होने पर ऋकारान्त के स्थान पर गुण 'अर्' होकर 'ह्वर्यात्' रूप सिद्ध होता है।

श्रुवः शृ च।

श्रुवः शृ इत्यादेशः स्यात्, श्नु प्रत्ययश्च। शृणोति।

सार्वधातुकमपित्।

अपित् सार्वधातुकं ङिद्वत्। शृणुतः

हुश्नुवोः सार्वधातुके।

हुश्नुवोरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्योवर्णस्य यण् स्यादचि सार्वधातुके। शृण्वन्ति। शृणोषि शृणुथः। शृणुथ शृणोमि।

लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः।

असंयोगपूर्वस्य प्रत्ययोकारस्य लोपो वा म्वोः परयोः शृण्वः, शृणुवः। शृण्मः, शृणुमः। शुश्राव। शुश्रुवतुः। शुश्रुवुः। शुश्रोथ। शुश्रुवथुः। शुश्रुव, शुश्राव, शुश्रव। शुश्रुव। शुश्रुम। श्रोता। श्रोष्यति। शृणोतु। शृणुतात्। शृणुताम्, शृण्वन्तु।

उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्।

असंयोगपूर्वात् प्रत्ययादुतो हेर्लुक्। शृणु, शृणुतात्। शृणुतम्। शृणुत।

गुणादेशौ – शृणवानि, शृणवाव, शृणवाम
अशृणोत्, अशृणुताम्, अशृण्वन्, अशृणोः
अशृणुतम्, अशृणुत।
अशृणवम्। अशृण्व, अशृणुव।
अशृण्म, अशृणुम।
शृणुयात्, शृणुयाताम्, शृणुयुः।
शृणुयाः, शृणुयातम्, शृणुयात।
शृणुयाम्। शृणुयाव, शृणुयाम।
श्रूयात्। अश्रौषीत्। अश्रोष्यत्।

असंयोगपूर्व उकारान्त प्रत्यय के पश्चात 'हि' का लुक् होता है। उदाहरण के लिए मध्यमपुरुष एकवचन में 'श्रु' से सिप् आदि होकर सेर्ह्यपिच्च से सकार के स्थान पर 'हि' करने पर 'शृणुहि' रूप बनता है। इस स्थिति में असंयोग पूर्व उकारान्त 'श्नु' प्रत्यय होने के कारण उसके परे 'हि' का लोप होकर 'शृणु' रूप सिद्ध होता है।